



पुर्णा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Grade - VII

Sanskrit

Specimen Copy

Aug & Sept

Year- 2021-22

अनुक्रमणिका

Sa -1 chapter – (1 to 8)

NO	TITLE	PAGE-NO
पञ्चमःपाठः	पण्डिता रमाबाई	
षष्ठःपाठः	सदाचारः	
सप्तमःपाठः	सङ्कल्पः सिद्धिदायकः	
अष्टमःपाठः	त्रिवर्णः ध्वजः	

पु.ना.

पञ्चमः पाठः-पण्डिता रमाबाई

➤ कठिन शब्दार्थः

- परित्यज्य - छोड़कर
- सार्धैकवर्षात् - डेढ़ वर्ष
- प्रत्यागच्छत - लौट आई
- दुर्भिक्षपीडिताः- अकाल पीड़ित
- अध्यापयत् - पढ़ाया

➤ शब्दार्थः

- असहत - सहन किया
- स्वमातुः - अपनी माता से
- निराश्रिताः - बेसहारा
- मुद्रणम् - छपाई
- प्रारब्धवती - आरम्भ किया

Translation

- (क) स्त्रीशिक्षाक्षेत्रे अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे जन्म अलभत। तस्याः पिता अनन्तशास्त्री डोंगरे माता च लक्ष्मीबाई आस्ताम्। तस्मिन् काले स्त्रीशिक्षायाः स्थितिः चिन्तनीया आसीत्। स्त्रीणां कृते संस्कृतशिक्षणं प्रायः प्रचलितं नासीत्। किन्तु डोंगरे रूढिबद्धां धारणां परित्यज्य स्वपत्नी संस्कृतमध्यापयत्। एतदर्थं सः समाजस्य प्रतारणाम् अपि असहत। अनन्तरं रमा अपि स्वमातुः **संस्कृतशिक्षा प्राप्तवती।**

- शब्दार्थः (Word Meanings) : चिन्तनीया-शोचनीय (pitiable), परित्यज्य-छोड़कर (giving up), अध्यापयत्-पढ़ाया (taught), प्रतारणाम्-ताड़ना को (to taunt), असहत-सहन किया (tolerated), स्वमातुः-अपनी माता से (from her mother), प्राप्तवती-प्राप्त की (received).

- सरलार्थः : स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई ने 1858 ई० में जन्म लिया। उनके पिता अनन्त शास्त्री डोंगरे और माता लक्ष्मीबाई थीं। उस समय में स्त्रियों की शिक्षा की दशा शोचनीय थी। स्त्रियों के लिए संस्कृत शिक्षा लगभग अप्रचलित थी। परन्तु डोंगरे ने रूढ़ियों से बँधी हुई धारणा को छोड़कर अपनी पत्नी को संस्कृत की शिक्षा दी। इसके लिए उन्होंने समाज की ताड़ना को भी सहा। इसके बाद रमा ने भी अपनी माता जी से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की।

- (ख) कालक्रमेण रमायाः पिता विपन्नः सञ्जातः। तस्याः पितरौ ज्येष्ठा भगिनी च दुर्भिक्षपीडिताः दिवङ्गताः। तदनन्तरं रमा स्व-ज्येष्ठभ्रात्रा सह पद्भ्यां समग्रं भारतम् अभ्रमत्। भ्रमणक्रमे सा कोलकातां प्रासा। संस्कृतवैदुष्येण सा तत्र 'पण्डिता' 'सरस्वती' चेति उपाधिभ्यां विभूषिता। तत्रैव सा ब्रह्मसमाजेन प्रभाविता वेदाध्ययनम् अकरोत्। पश्चात् सा स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती। 1880 तमे ख्रिष्टाब्दे सा विपिनबिहारीदासेन सह बाकीपुर न्यायालये विवाहम् अकरोत् । साधैकवर्षात् अनन्तरं तस्याः पतिः दिवङ्गतः।

- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

विपन्नः-निर्धन (poor), दुर्भिक्ष-अकाल (famine), कुर्वती करती हुई (while doing), आन्दोलनम्-आन्दोलन को (movement), प्रारब्धवती-आरम्भ किया (started), दिवङ्गताः-मृत्यु को प्राप्त हो गए (passed away), सार्धैकवर्षात्-डेढ साल से (के) (One and a half year).

- सरलार्थः :

समय के बदलने से रमा के पिता निर्धन हो गए। उनके माता-पिता और बड़ी बहन अकाल से पीडित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गए। इसके पश्चात् रमा अपने बड़े भाई के साथ पैदल सारे भारत में घूमती हुई कोलकाता पहुँचीं। संस्कृतविद्वता के कारण उन्हें वहाँ 'पण्डिता' और 'सरस्वती' उपाधियों द्वारा विभूषित किया गया। वहाँ ही ब्रह्म-समाज से प्रभावित होकर उन्होंने वेदों का अध्ययन किया। बाद में उन्होंने बालिकाओं और स्त्रियों के लिए संस्कृत और वेद-शास्त्र आदि की शिक्षा के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। सन् 1880 ई० में उन्होंने विपिन बिहारी दास के साथ न्यायालय में विवाह किया। डेढ वर्ष के बाद उनके पति की मृत्यु हो गयी।

- (ग) तदनन्तरं मनोरमया सह जन्मभूमिं महाराष्ट्र प्रत्यागच्छत्। नारीणां सम्मानाय शिक्षायै च सा स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती। हण्टर-शिक्षा-आयोगस्य समक्षं रमाबाई नारीशिक्षाविषये स्वमतं प्रस्तुतवती। सा उच्चशिक्षार्थं इंग्लैण्डदेशं गतवती। तत्र ईसाईधर्मस्य स्त्रीविषयकैः उत्तमविचारैः प्रभाविता जाता।

- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

प्रत्यागच्छत् (प्रति+आगच्छत्)-लौट आई (returned), प्रस्तुतवती प्रस्तुत किया (presented.)

- सरलार्थः इसके पश्चात् वे पुत्री मनोरमा के साथ महाराष्ट्र लौट आईं। स्त्रियों के सम्मान और शिक्षा के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पित कर दिया। हण्टर-शिक्षा-आयोग के सामने रमाबाई ने महिला शिक्षा के विषय में अपना मत प्रस्तुत किया। वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गईं। वहाँ स्त्रियों के विषय में ईसाई धर्म के उत्तम विचारों से प्रभावित हुईं ।

- (घ) इंग्लैण्डदेशात् रमाबाई अमरीकादेशम् अगच्छत्। तत्र सा भारतस्य विधवास्त्रीणां सहायतार्थम् अर्थसञ्चयम् अकरोत्। भारतं प्रत्यागत्य मुम्बईनगरे सा 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्। अस्मिन् आश्रमे निस्सहायाः स्त्रियः निवसन्ति स्म। तत्र स्त्रियः मुद्रण टङ्कण-काष्ठकलादीनाञ्च प्रशिक्षणमपि लभन्ते स्म। परम् इदं सदनं पुणेनगरे स्थानान्तरितं जातम्। ततः पुणेनगरस्य समीपे केडगाँव-नाम्नि स्थाने 'मुक्तिमिशन' नाम संस्थानं तया स्थापितम्। अत्र अधुना अपि निराश्रिताः स्त्रियः ससम्मानं जीवनं यापयन्ति।

- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

अर्थसञ्चयम्-धन इकट्ठा करना (collect money), प्रत्यागत्य (प्रति+आगत्य)-लौटकर (after returning), निस्सहायाः (बं०व०)-बेसहारा (destitute), मुद्रणम्-छपाई (printing), टङ्कणम्-टाइप (typing), काष्ठकला-लकड़ी पर कलाकारी (wood craft), संस्थानम्-संस्था (institution), निराश्रिताः (बं०व०)-बेसहारा (destitute), ससम्मानं आदर सहित (with honour), यापयन्ति-बिताती हैं

- सरलार्थः

इंग्लैण्ड देश से रमाबाई अमरीका गई। वहाँ उन्होंने भारत की विधवा महिलाओं की सहायता के लिए धन इकट्ठा किया। भारत लौटकर मुम्बई नगर में उन्होंने 'शारदा-सदन' स्थापित किया। इस आश्रम में बेसहारा स्त्रियाँ रहती थीं। वहाँ महिलाएँ छपाई, टाइप और लकड़ी की कलाकारी आदि का प्रशिक्षण भी लेती थीं। परन्तु इस सदन का पुणे नगर में स्थान परिवर्तन हो गया। इसके पश्चात् पुणे नगर के समीप केडगाँव नामक स्थान पर इनके द्वारा 'मुक्ति मिशन' नामक संस्था स्थापित की गई। यहाँ अब भी बेसहारा महिलाएँ सम्मान का जीवन बिताती हैं।

(ङ) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्। सा देश-विदेशानाम् अनेकासु भाषासु निपुणा आसीत्। समाजसेवायाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि तस्याः महत्त्वपूर्णम् अवदानम् अस्ति। 'स्त्रीधर्मनीति', 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' इति तस्याः प्रसिद्ध रचनाद्वयं वर्तते।

- शब्दार्थाः (Word Meanings):

निधनम्-मृत्यु (death), अवदानम्-योगदान (contribution), समाजसेवायाः-समाजसेवा का (of social service), रचनाद्वयं-दो रचनाएँ (two works.) पण्डिता रमाबाई

- सरलार्थः :

सन् 1922 ई० में रमाबाई जी की मृत्यु हो गई। वह देश-विदेश की अनेक भाषाओं में निपुण थीं। समाजसेवा के अलावा लेखन के क्षेत्र में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'स्त्री धर्म नीति' और 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' ये उनकी प्रसिद्ध दो रचनाएँ हैं।

अभ्यासः

➤ साहित्य

प्र-1 एकपदेन उत्तरतः

(क) 'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां का विभूषिता?

उत्तर- 'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां पंडिता रमाबाई विभूषिता।

(ख) रमाकुतः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती?

उत्तर- रमा स्वमातुः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती।

(ग) रमाबाई केन सह विवाहम् अकरोत्?

उत्तर- रमाबाई विपिनबिहारी दासेन सह विवाहम् अकरोत्।

(घ) कासां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती?

उत्तर- नारीणां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती।

(ङ) रमाबाई उच्च शिक्षार्थं कुत्र आगच्छत्?

उत्तर- रमाबाई उच्च शिक्षार्थं इंग्लैण्ड देशं आगच्छत्।

प-2 रेखाङ्कित पदानि आधृत्यप्रश्न निर्माणं कुरुतः

(क) रमायाः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत।

उत्तर- कस्याः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत?

(ख) पत्युः मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्।

उत्तर- कस्य मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्?

(ग) रमाबाई मुम्बईनगरे 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्।

उत्तर- रमाबाईकुत्र 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्?

(घ) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्।

उत्तर- 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे कस्याः निधनम् अभवत्?

(ङ) स्त्रियः शिक्षां लभन्ते स्म।

उत्तर- कस्मै शिक्षां लभन्ते स्म?

प्र-3 प्रश्ना नामुत्तराणि लिखत।

(क) रमाबाई किमर्थम् आन्दोलनं प्रारब्धवती?

उत्तर- रमाबाई स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती।

(ख) निःसहायाः स्त्रियः आश्रमे किं किं लभन्ते स्म?

उत्तर- निःसहायाः स्त्रियः आश्रमे मुद्रण-टंकण-काष्ठकला दीनाञ्च लभन्ते स्म।

(ग) कस्मिन् विषये रमाबाई-महोदयायाः योगदानम् अस्ति?

उत्तर- समाजसेवायाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि रमाबाई-महोदयायाः योगदानम् अस्ति।

(घ) केन रचना द्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते?

उत्तर- 'स्त्रीधर्मनीति', 'हाईकास्टहिन्दूविमेन' इति रचनाद्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते।

➤ व्याकरण

प्र-4 अधोलिखितानां पदानां निर्देशानुसारं पद परिचय लिखत।

पदानि	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा- वेदानाम्	वेद	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
पिता	पितृ	पुँल्लिङ्गम्	प्रथमा	एकवचनम्
शिक्षायै	शिक्षा	स्त्रीलिङ्गम्	चतुर्थी	एकवचनम्
कन्याः	कन्या	स्त्रीलिङ्गम्	प्रथमा	बहुवचनम्
नारीणाम्	नारी	स्त्रीलिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
मनोरमया	मनोरमा	स्त्रीलिङ्गम्	तृतीया	एकवचनम्

प्र-5 अधोलिखितानां धातूनां लकारं पुरुषं वचनञ्च लिखत।

धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्	
यथा- आसीत्	अस्	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
कुर्वन्ति	'कृ'	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्

आगच्छत्	'गम्'	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
निवसन्ति	'नि' उपसर्ग 'वस' धातु	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
गमिष्यति	'गम्'	लृट्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
अकरोत्	'कृ'	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्

प्र-6 अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत।

- (क) 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई जन्म अलभत।
 (ख) सास्वमातुः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती।
 (ग) रमाबाई-महोदयायाः विपिन बिहारी दासेन सह विवाहः अभवत्।
 (घ) सा उच्चाशिक्षार्थम् इंग्लैण्डदेशं गतवती।
 (ङ) सा मुम्बई नगरे शारदा-सदनम् अस्थापयत्।
 (च) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्।



षष्ठः पाठः - सदाचारः

➤ कठिन शब्दार्थः

- | | | | |
|-----------|-----------|--------------|--------------|
| • आचारः | - व्यवहार | • मृदृता | - कोमलता |
| • अनुतम | - झूठ | • वाचा | - वाणी से |
| • औदार्यम | - उदारता | • परिवर्जयते | - बचना चाहिए |
| • ऋजुता | - सरलता | | |

➤ शब्दार्थः

- श्वः - आने वाला कल
- कुर्वीत - करना चाहिए
- कौटिल्यम - कुटिलता
- सेवेत - सेवा करनी चाहिए
- पूवाहे - दोपहर से पहले
- पारम्पर्यक्रमागत- परम्पराक्रम से आया हुआ

सदाचारः पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ के श्लोकों के द्वारा मनुष्य के सद्व्यवहार का ज्ञान दिया गया है। मनुष्य का आचरण समाज में, गुरुजन और माता-पिता एवं मित्रों के प्रति कैसा होना चाहिए, इसका उपदेश दिया गया है।

सदाचारः Summary

प्रस्तुत पाठ में सदाचार एवं नीति से सम्बन्धित बातें कही गई हैं। प्रथम श्लोक में कहा गया है आलस्य मनुष्य का महान शत्रु है और परिश्रम बन्धु। द्वितीय श्लोक में कहा गया है कि मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। मनुष्य को समय रहते ही कार्य पूर्ण कर लेने चाहिए। तीसरे श्लोक में बताया है कि मनुष्य को प्रिय सत्य बोलना चाहिए तथा अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। इसी प्रकार प्रिय असत्य भी नहीं कहना चाहिए। चतुर्थ श्लोक में कहा है कि मनुष्य को कुटिल व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिए। उसे अपने व्यवहार में सरलता, कोमलता तथा उदारता आदि रखनी चाहिए।

पाँचवें श्लोक में बताया गया है कि मनुष्य को श्रेष्ठ गुणों से युक्त व्यक्ति व माता-पिता की मन, वचन और कर्म से सेवा करनी चाहिए। छठे श्लोक में कहा है कि मित्र के साथ कलह करके व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता है। अतः मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए।

सदाचारः **Word Meanings Translation in Hindi**

(क) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपूः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥

अर्थ: निश्चय से आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा दुश्मन (शत्रु) है। प्रयत्न (परिश्रम) के साथ उसका (मनुष्य का) कोई मित्र नहीं है जिसे करके वह दुःखी नहीं होता है।

(ख) श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्ने चापराह्निकम्।

नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्॥2॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

कुर्वीत-करना चाहिए (should do), पूर्वाह्ने-दोपहर से पहले (in the forenoon), आपराह्निकम्-दोपहर का (of the afternoon), न प्रतीक्षते-प्रतीक्षा नहीं करती है (does not wait), कृतमस्य (कृतम् + अस्य)-इसका हो गया है (his work is done), वा-या (or)

सरलार्थ :

कल का काम आज कर लेना चाहिए और दोपहर का पूर्वाह्न में। मृत्यु प्रतीक्षा (इन्तज़ार) नहीं करती कि इसका काम हो गया या नहीं हुआ अर्थात् इसने काम पूरा कर लिया या नहीं। भाव यह है कि काम को कभी टालना नहीं चाहिए क्योंकि पता नहीं कब जीवन समाप्त हो जाए।

(ग) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥3॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

ब्रूयात्-बोलना चाहिए (should speak), प्रियम्-मधुर (sweet), सत्यं-सच (truth), अनृतम्-झूठ (lie), सनातनः-शाश्वत (सदा से चला आ रहा) (eternal), धर्मः-धर्म/आचार (ethic).

सरलार्थ :

सच बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सच नहीं बोलना चाहिए और प्रिय झूठ भी

(घ) सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।

ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं च न कदाचन ॥4॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

सर्वदा-हमेशा (always), औदार्यम्-उदारता (generosity), ऋजुता-सीधापन (simplicity, straightforward), मृदुता-कोमलता (tenderness), कौटिल्यं-कुटिलता, टेढ़ापन (crookedness), न कदाचन-कभी नहीं (never).

सरलार्थ :

व्यवहार में हमेशा (सदैव) उदारता, सच्चाई, सरलता और मधुरता हो (होनी चाहिए), (व्यवहार

(ड) श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा॥5॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

वाचा-वाणी से (by speech), मनसा-मन से (by heart), कर्मणा-कार्यों से (by actions), सततं-
निरन्तर (ceaselessly), सदा-हमेशा (always), सेवेत-सेवा करनी चाहिए (should serve).

सरलार्थ :

सज्जन, गुरुजन और माता-पिता की भी हमेशा मन से, कर्म से और वाणी से निरन्तर सेवा

(च) मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत्॥6॥

शब्दार्थः (Word Meanings) :

मित्रेण-मित्र से (with friend), कलह-झगड़ा (variance quarrel), न कदापि-कभी भी नहीं
(never), प्रयासेन-प्रयत्न से (by efforts), परिवर्जयेत्-दूर रहना चाहिए (stay away).

सरलार्थ :

मित्र के साथ झगड़ा करके मनुष्य कभी भी सुखी नहीं रहता है। यह जानकर प्रयत्न से उसे
(झगड़े को) ही छोड़ देना चाहिए।

अभ्यासः

➤ साहित्य

प्र-2 उपयुक्तथनानां समक्षम्'आम्' अनुपयुक्त कथनानां समक्षं'न' इति
लिखत

(क) प्रातःकाले ईश्वरं स्मरेत्।

(ख) अनृतं ब्रूयात्।

आम्
न

- (ग) मनसा श्रेष्ठ जनं सेवेत।
 (घ) मित्रेण कलहं कृत्वा जनः सुखी भवति।
 (ङ) श्वः कार्यम् अद्य कुर्वीत।

आम्

न

आम्

प्र-3 एकपदेन उत्तरत।

- (क) कः न प्रतीक्षते?
 (ख) सत्यता कदा व्यवहारे स्यात्?
 (ग) किंब्रूयात्?
 (घ) केन सह कलहं कृत्वा नरः सुखीन भवेत्?
 (ङ) कः महारिपुः अस्माक शरीरे तिष्ठति?

मृत्युः

सर्वदा

सत्यम् प्रियम्

मित्रेण

आलस्यम्

प्र-4 रेखाङ्कित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

- (क) मृत्युः न प्रतीक्षते।
 उत्तर-कः न प्रतीक्षते?

- (ख) कलहं कृत्वा नरः दुःखी भवति।
 उत्तर-किं कृत्वा नरः दुःखी भवति?

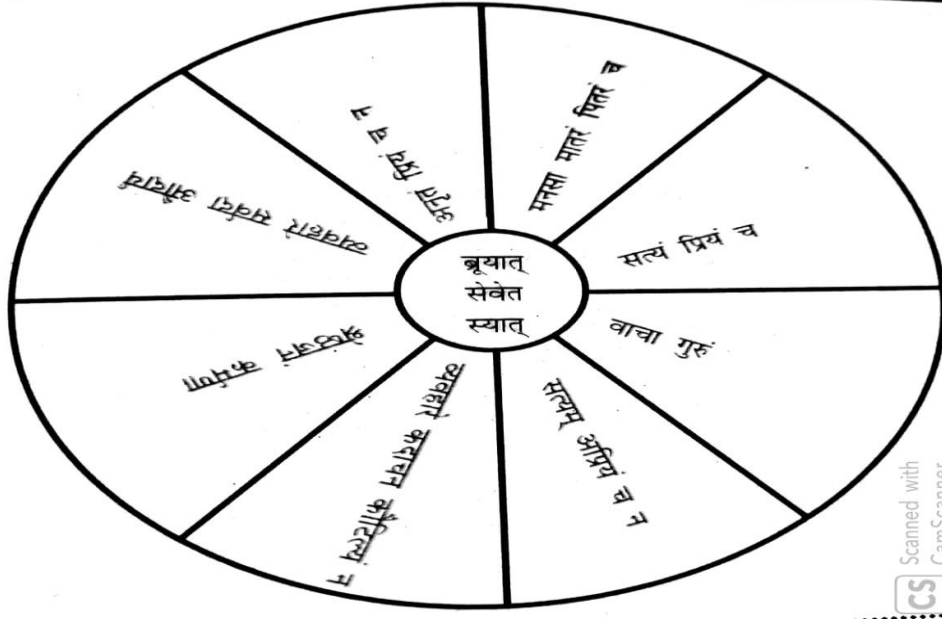
- (ग) पितरं कर्मणा सेवेत।
 उत्तर-कम् कर्मणा सेवेत?

- (घ) व्यवहारे मृदुता श्रेयसी।
 उत्तर-व्यवहारे का श्रेयसी?

- (ङ) सर्वदा व्यवहारे ऋजुता विधेया।
 उत्तर-कदा व्यवहारे ऋजुता विधेया?

रचनात्मक-कार्यम्

प्र-5 प्रश्नमध्ये त्रीणि क्रियापदानि सन्ति। तानि प्रयुज्य सार्थ(वाक्यानि रचयत।



Scanned with
CamScanner

- (क) अनृतं प्रियं च न ब्रूयात्।
 (ख) व्यवहारे सर्वदा औदार्यं स्यात्।
 (ग) श्रेष्ठं जनं कर्मणा सेवेत।
 (घ) व्यवहारे कदाचन कौटिल्यं न स्यात्।
 (ङ) सत्यम् अप्रियं च न ब्रूयात्।
 (च) वाचा गुरुं सेवेत।
 (छ) सत्यं प्रियं च ब्रूयात्।
 (ज) मनसा मातरं पितरं च सेवेत।

प्र-6 मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

तथा न कदाचन सदा च अपि

- (क) भक्तः सदा ईश्वरं स्मरति।
 (ख) असत्यं न वक्तव्यम्।
 (ग) प्रियं तथा सत्यं वदेत्।
 (घ) लतामेधा च विद्यालयं गच्छतः।
 (ङ) अपि कुशाली भवान्?
 (च) महात्मा गान्धी कदाचन अहिंसां न अत्यजत्।

प्र-7 चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत।



- (क) सः शिक्षकः कक्षायाम् श्यामपट्टे प्रश्नम् लिखति।
(ख) ते छात्राः पुस्तिकायाम् उत्तराणिलिखन्ति।
(ग) शिक्षकः 'बालकः' पदमलिखति।
(घ) केचन छात्राः श्यामपट्टम् पश्यन्ति।
(ङ) तत्र एकं पुस्तकं मन्वे अस्ति।

पु.ना.

सप्तमः पाठः -सङ्कल्पः सिद्धिदायकः

➤ कठिन शब्दार्थः

- पतिरूपेण - पति के रूप में
- जीवनाभिलाषः - जीवन की चाह
- आकुलितम - परेशान
- शिलायाम - चट्टान
- पुजोपकरणम् - पूजा की सामग्री
- तूष्णीम् - चुप

➤ शब्दार्थः

- मनीषिता - चाहा गया
- मनसा - मन से
- वचसा - वचन से
- झटिति - जल्दी से
- अन्यथा - अन्य प्रकार से
- आकुलीभूय - परेशान होकर
- नेपथ्ये - परदे के पीछे से
- पृष्ठतः - पीछे से

सङ्कल्पः सिद्धिदायकः Summary

इस पाठ में बताया गया है कि दृढ इच्छा शक्ति सिद्धि को प्रदान करने वाली होती है। कथा का सार इस प्रकार है नारद के वचन से प्रभावित होकर पार्वती ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए तप करने की इच्छा प्रकट की। पार्वती की माता मेना उसे तप करने के लिए निरुत्साहित करती हुई कहने लगी कि मनचाहे देवता और सुख के सभी साधन तुम्हारे घर में हैं। तुम्हारा शरीर कोमल है जो कठोर तप के अनुकूल नहीं है। इसलिए तुम्हें तपस्या में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए।

पार्वती ने माता को आश्वस्त करते हुए कहा कि वह किसी भी प्रकार की बाधा से भयभीत नहीं होगी तथा अभिलाषा के पूर्ण हो जाने पर पुनः घर लौट आएगी। इस प्रकार पार्वती अपनी माता को वचन देकर वन में जाकर तपस्या करने लगी। उनकी कठोर तपस्या से हिंसक पशु भी उनके मित्र बन गए। उन्होंने वेदों का अध्ययन किया तथा कठोर तपस्या का आचरण किया।

कुछ समय पश्चात् एक ब्रह्मचारी उनके आश्रम में आया। कुशलक्षेम पूछने के पश्चात् ब्रह्मचारी ने उनसे तपस्या का उद्देश्य जानना चाहा। पार्वती की सहेली के मुख से तपस्या का प्रयोजन जानकर वह जोर से हँसने लगा।

तब वह ब्रह्मचारी शिव की निंदा करने लगा। वह कहने लगा-शिव अवगुणों की खान है। वह श्मशान में रहता है। भूतप्रेत ही उसके अनुचर हैं। तुम उससे अपना मन हटा लो। शिव से सच्चा प्रेम करने वाली पार्वती शिव की निंदा सुनकर क्रोधित हो गई। वह उस ब्रह्मचारी को बुरा भला कहने लगी और उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहने लगी। ब्रह्मचारी के अडियल रवैये को देखकर पार्वती आश्रम से बाहर जाने को तत्पर हो गई। तब शिव ने अपना वास्तविक रूप प्रकट करके पार्वती से कहा कि मैं ब्रह्मचारी के रूप में शिव ही हूँ। आज तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई हो। यह सुनकर पार्वती अत्यधिक प्रसन्न हो गई।

सड.कल्पः सिद्धिदायकः Word Meanings Translation in Hindi

(क) पार्वती शिवं पतिरूपेण अवाञ्छत्। एतदर्थं सा तपस्यां कर्तुम् ऐच्छत्। सा स्वकीयं

मनोरथं मात्रे न्यवेदयत्। तच्छ्रुत्वा माता मेना चिन्ताकुला अभवत्।

शब्दार्थः (Word Meanings): अवाञ्छत् – चाहती थी (wanted/wished), एतदर्थम् (एतत्+अर्थम्)-इसके लिए (for this), कर्तुम्-करने के लिए (to do), ऐच्छत्-चाहती थी (wanted), मात्रे-माता को (to mother), न्यवेदयत्-निवेदन किया/बताया (told/informed), तच्छ्रुत्वा (तत्+श्रुत्वा)-यह सुनकर (hearing this), चिन्ताकुला-चिन्ता से व्याकुल (restless with worry).

सरलार्थ :

पार्वती शिव को पति के रूप में चाहती थी। इसके लिए वह तपस्या करना चाहती थी। उसने अपनी इच्छा माँ को बताई। यह सुनकर माँ मेना चिन्ता से व्याकुल हो गई।

(ख) मेना- वत्से! मनीषिता देवताः गृहे एव सन्ति। तपः कठिनं भवति। तव शरीरं सुकोमलं वर्तते। गृहे एव वस।

अत्रैव तवाभिलाषः सफलः भविष्यति।

पार्वती- अम्ब! तादृशः अभिलाषः तु तपसा एव पूर्णः भविष्यति।

अन्यथा तादृशं च पतिं कथं प्राप्स्यामि। अहं तपः एव चरिष्यामि इति मम सङ्कल्पः।

मेना- पुत्रि! त्वमेव मे जीवनाभिलाषः॥

पार्वती- सत्यम्। परं मम मनः लक्ष्यं प्राप्तुम् आकुलितं वर्तते। सिद्धिं प्राप्य पुनः तवैव शरणम् आगमिष्यामि। अद्यैव विजयया साकं गौरीशिखरं गच्छामि। (ततः पार्वती निष्क्रामति)

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

वर्तते-है (is), तवाभिलाषः (तव+अभिलाषः)-तुम्हारी अभिलाषा (your desire), तपसा-तप द्वारा (with penance), अन्यथा-नहीं तो (otherwise), प्राप्स्यामि-पाऊँगी (shall obtain), चरिष्यामि-करूँगी (shall observe), प्राप्तुम्-पाने के लिए (to obtain), प्राप्य-पाकर (having obtained), अद्यैव (अद्य + एव)-आज ही (today only), साकम्-साथ (with), निष्क्रामति-निकल जाती है (goes out), सङ्कल्पः-संकल्प (determination).

सरलार्थः

मेना- बेटा! इष्ट देवता तो घर में ही होते हैं। तप कठिन होता है। तुम्हारा शरीर कोमल है। घर पर ही रहो। यहीं तुम्हारी अभिलाषा पूरी हो जाएगी। पार्वती- माँ! वैसी अभिलाषा तो तप द्वारा ही पूरी होगी। अन्यथा मैं वैसा पति कैसे पाऊँगी। मैं तप ही करूँगी-यह मेरा संकल्प है। मेना- पुत्री, तुम ही मेरी जीवन अभिलाषा हो। पार्वती- ठीक है। पर मेरा मन लक्ष्य पाने के लिए व्याकुल है। सफलता पाकर पुनः तुम्हारी ही शरण में आऊँगी। आज ही विजया के साथ गौरी शिखर पर जा रही हूँ। (उसके बाद पार्वती बाहर चली जाती है)

(ग) (पार्वती मनसा वचसा कर्मणा च तपः एव तपति स्म। कदाचिद् रात्रौ स्थण्डिले,

कदाचिच्च शिलायां स्वपिति स्म। एकदा विजया अवदत्।)

विजया- सखि! तपःप्रभावात् हिंस्रपशवोऽपि तव सखायः जाताः।

पञ्चाग्नि-व्रतमपि त्वम् अतपः। पुनरपि तव अभिलाषः न पूर्णः अभवत्।

पार्वती- अयि विजये! किं न जानासि? मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति। अपि च मनोरथानाम् अगतिः नास्ति।

विजया- त्वं वेदम् अधीतवती। यज्ञं सम्पादितवती। तपःकारणात्
जगति तव प्रसिद्धिः।

‘अपर्णा’ इति नाम्ना अपि त्वं प्रथिता पुनरपि तपसः फलं नैव दृश्यते।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

मनसा-मन से (in mind), वचसा-वाणी द्वारा (in speech), कर्मणा-कर्म द्वारा (by one's deed), कदाचित्-कभी (sometimes), रात्रौ-रात को (at night), स्थण्डिले-भूमि पर (on barrenland), स्वपिति स्म-सोती थी (slept), हिंस्रपशुः-हिंसक पशु (ferocious animals), सखायः-मित्र (friends), पुनरपि (पुनः + अपि)-फिर भी (inspite of that), अतपः-तप किया (did penance), किं न जानासि-क्या नहीं जानती हो (do you not know), मनस्वी-ज्ञानी (high-minded), अधीतवती-अध्ययन किया (did study), जगति-जगत में (in the world), नाम्ना-नाम से (by name), प्रथिता-विख्यात (famous), तपसः-तप का (of penance), दृश्यते-दिखाई देता है (is seen).

सरलार्थः

(पार्वती ने मन, वचन व कर्म से तप ही किया। कभी रात को भूमि पर और कभी शिला पर सोती थी। एक बार विजया ने कहा)

विजया- सखी! तप के प्रभाव से हिंसक पशु भी तुम्हारे मित्र बन गए हैं। पञ्चाग्नि व्रत भी तुमने किया। फिर भी तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं हुई।

पार्वती- अरी विजया! क्या तुम नहीं जानती हो? मनस्वी कभी धैर्य नहीं छोड़ता है। एक बात और इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती।

विजया- तुमने वेद का अध्ययन किया। यज्ञ किया। तप के कारण तुम्हारी संसार में ख्याति

(घ) पार्वती- अयि आतुरहृदये! कथं त्वं चिन्तिता ।

(नेपथ्ये-अयि भो! अहम् आश्रमवटुः। जलं वाञ्छामि।)

(ससम्भ्रमम्) विजये! पश्य कोऽपि वटुः आगतोऽस्ति।

(विजया झटिति अगच्छत्, सहसैव वटुरूपधारी शिवः तत्र प्राविशत्)

विजया-वटो! स्वागतं ते! उपविशतु भवान्। इयं मे सखी पार्वती। शिवं प्राप्नुम् अत्र तपः करोति।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

नेपथ्ये-परदे के पीछे (backstage), ससम्भ्रमम्-हड़बड़ाहट से (nervously), वटुः-ब्रह्मचारी (a bachelor scholar), झटिति-झट से (जल्दी) (quickly), उपविशतु-बैठिए (please sit), भवान्-आप (your reversed self), इयं-यह (this).

सरलार्थः

पार्वती- अरे, व्याकुल हृदय वाली, तुम चिन्तित क्यों हो? (परदे के पीछे- अरे कोई है! मैं आश्रम में रहने वाला ब्रह्मचारी हूँ। मैं पानी पीना चाहता हूँ। (मुझे पानी चाहिए)। (हड़बड़ाहट से)। विजया! देखो कोई ब्रह्मचारी आया है। (विजया झट से गई और सहसा ही वटुरूपधारी शिव ने प्रवेश किया) विजया- हे ब्रह्मचारी आपका स्वागत है। कृपया बैठिए। यह मेरी सखी पार्वती है जो शिव को पति रूप में पाने के लिए तप कर रही है।

(ड) वटुः- हे तपस्विनि! किं क्रियार्थं पूजोपकरणं वर्तते, स्नानार्थं जलं सुलभम् भोजनार्थं फलं वर्तते? त्वं तु जानासि एव शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

(पार्वती तूष्णीं तिष्ठति) वटुः- हे तपस्विनि! किमर्थं तपः तपसि? शिवाय?

(पार्वती पुनः तूष्णीं तिष्ठति)

विजया-(आकुलीभूय) आम्, तस्मै एव तपः तपति।

(वटुरूपधारी शिवः सहसैव उच्चैः उपहसति)

वटुः- अयि पार्वति! सत्यमेव त्वं शिवं पतिम् इच्छसि? (उपहसन्)

नाम्ना शिवः

अन्यथा अशिवः। श्मशाने वसति। यस्य त्रीणि नेत्राणि, वसनं व्याघ्रचर्म,

अङ्गरागः चिताभस्म, परिजनाश्च भूतगणाः। किं तमेव शिवं पतिम्

इच्छसि?

शब्दार्थः (Word Meanings) :

क्रियार्थम्-तप की क्रिया के लिए (for doing penance), शरीरमाद्यम् (शरीरम् आद्यम्)-शरीर सर्वप्रथम (body is foremost), तूष्णीम्-चुपचाप (quiet), आकुलीभूय-व्याकुल होकर (getting agitated), उपहसति-उपहास करता है (makes fun), अशिवः-अशुभ (inauspicious), श्मशाने-

शमशान में (in the cremation ground), वसनम् वस्त्र (clothing), परिजनाश्व-(परिजनाः + च) और परिजन (all attendants), उपहसन् उपहास करते हुए (making fun).

सरलार्थः

वटुः- हे तपस्विनी! क्या तपादि करने के लिए पूजा-सामग्री है, स्नान के लिए जल उपलब्ध है? भोजन के लिए फल हैं। तुम तो जानती ही हो शरीर ही धर्म का आचरण के लिए मुख्य साधन है। (पार्वती चुपचाप बैठी है)

वटुः- हे तपस्विनी किसलिए तप कर रही हो? शिव के लिए?

(पार्वती फिर भी चुप बैठी है)

विजया- (व्याकुल होकर) हाँ, उसी के लिए तप कर रही है।

(वटुरूपधारी शिव अचानक ही ज़ोर से उपहास करता है)

वटुः- अरी पार्वती! सच में तुम शिव को पति (रूप में) चाहती हो? (उपहास/मज़ाक करते हुए)

वह नाम से शिव अर्थात् शुभ है अन्यथा अशिव अर्थात् अशुभ है। शमशान में रहता है।

जिसके तीन नेत्र हैं, वस्त्र व्याघ्र की खाल है, अंगलेप चिता की भस्म और सेवकगण

भूतगण हैं। क्या तुम उसी शिव को पति के रूप में पाना चाहती हो?

(च) पार्वती- (क्रुद्धा सती) अरे वाचाल! अपसर। जगति न कोऽपि शिवस्य यथार्थं स्वरूपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।

(विजयां प्रति) सखि! चल। यः निन्दां करोति सः तु पापभाग् भवति एव, यः शृणोति सोऽपि पापभाग् भवति।

(पार्वती द्रुतगत्या निष्क्रामति। तदैव पृष्ठतः वटोः रूपं परित्यज्य शिवः तस्याः

हस्तं गृह्णाति। पार्वती लज्जया कम्पते)

शिव- पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन अद्यप्रभृति अहं तव तपोभिः क्रीतदासोऽस्मि।

(विनतानना पार्वती विहसति)

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

वाचाल-बातूनी (one who talks too much/babbler), अपसर-दूर हट (go away), न कोऽपि

(कः + अपि)-कोई भी नहीं (no body), पापभाग पापी (sinful), द्रुतगत्या-तीव्र गति से

(hastily), पृष्ठतः-पीछे से (from behind), गृह्णाति पकड़ लेता है (holds), लज्जया-लज्जा से

(with shame), अद्यप्रभृति-आज से (today onwards), क्रीतदासः-खरीदा हुआ दास (slave), विनतानना-झुके हुए मुख वाली (with face hung).

सरलार्थः

पार्वती- (क्रुद्ध होकर) अरे वाचाल! चल हट। संसार में कोई भी शिव के यथार्थ (असली) रूप को नहीं जानता। जैसे तुम हो वैसे ही बोल रहे हो। (विजया की ओर) सखी! चलो। जो निन्दा करता है वह पाप का भागी होता है, जो सुनता है वह भी पापी होता है। (पार्वती तेजी से (बाहर) निकल जाती है। तभी पीछे से ब्रह्मचारी का रूप त्याग कर शिव उसका हाथ पकड़ लेते हैं। पार्वती लज्जा से काँपती है।)

शिव- पार्वती! मैं तुम्हारे (दृढ़) संकल्प से खुश हूँ। आज से मैं तुम्हारा तप से खरीदा दास हूँ। (झुके मुख वाली पार्वती मुस्कुराती है)

अभ्यासः

➤ व्याकरण

प्र-2 उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

(क० एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- वसतिस्म	वसतःस्म	वसन्तिस्म
पूजयतिस्म	पूजयतःस्म	पूजयन्तिस्म
रक्षितस्म	रक्षतःस्म	रक्षन्तिस्म
चरितस्म	चरतःस्म	चरन्तिस्म
करोतिस्म	कुरुतःस्म	कर्वन्तिस्म

(ख० पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
प्रथमपुरुषः	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
प्रथमपुरुषः	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्

(ग० पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
मध्यमपुरुषः	अवसः	अवसतम्	अवसत
मध्यमपुरुषः	<u>अपूजयः</u>	अपूजयतम्	<u>अपूजयत</u>
मध्यमपुरुषः	<u>अचरः</u>	<u>अचरतम्</u>	अचरत

(घ० पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम
उत्तमपुरुषः	अलिखम्	<u>अलिखाव</u>	<u>अलिखाम</u>
उत्तमपुरुषः	<u>अरचयम्</u>	अरचयाव	<u>अरचयाम</u>

➤ साहित्य

प्र-3 प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत।

(क) तपः प्रभावात्के सखायः जाताः?

उत्तर-तपः प्रभावा त्तिंस्रपशवो पि सखायः जाताः।

(ख) पार्वती तपस्यार्थं कुत्र अगच्छत्?

उत्तर-पार्वती तपस्यार्थं गौरीशिखरम् अगच्छत्।

(ग) कः श्मशाने वसति?

उत्तर-शिवः श्मशाने वसति।

(घ) शिवनिन्दां श्रुत्वा का क्रुद्धा जाता?

उत्तर-शिवनिन्दां श्रुत्वा पार्वती क्रुद्धा जाता।

(ङ) वटुरूपेण तपोवनं कः प्राविशत्?

उत्तर-वटुरूपेण तपोवनं शिवः प्राविशत्।

प्र-4 कः शकांशं कां प्रति कथयति।

यथा- वत्से! तपःकठिनं भवति?

माता

पार्वतीम्

(क) अहंतपः एव चरिष्यामि?	पार्वती	मेनाम्
(ख) मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति।	पार्वती	विजयाम्
(ग) अपर्णा इति नाम्ना त्वं प्रथिता।	विजया	पार्वतीम्
(घ) पार्वति! प्रीतोऽस्मितव सङ्कल्पेन।	शिवः	पार्वतीम्
(ङ) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।	वटुः	विजयाम्
(च) अहं तव क्रीत दासोऽस्मि।	शिवः	पार्वतीम्

प्र-5 प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत।

(क) पार्वती क्रुद्धा सती किम् अवदत्?

उत्तर-पार्वती क्रुद्धा सती अवदत्यत् अरेवाचाल! अपसर। जगतिनकोऽपिशिवस्य यथार्थं स्वरूपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।

(ख) कः पाप भाग्भवति?

उत्तर-शिवः निन्दायः करोति शृणोति च पापभाग्भवति।

(ग) पार्वती किं कर्तुम् ऐच्छत्?

उत्तर-पार्वती तपस्यां कर्तुम् ऐच्छत्।

(घ) पार्वती कया सा कं गौरीशिखरं गच्छति?

उत्तर-पार्वती विजय यासा कं गौरीशिखरं गच्छति।

प्र-6 मञ्जूषातः पदानि चित्वा समानार्थकानि पदानि लिखत।

माता मौनम् प्रस्तरे जन्तवः नयनानि

शिलायां

प्रस्तरे

- पशवः जन्तवः
- अम्बा माता
- नेत्राणि नयनानि
- तूष्णीम् मौनम्

प्र-7 उदाहरणानुसारं पद रचनां कुरुत।

यथा	वसतिस्म =	अवसत्।
(क)	पश्यतिस्म =	<u>अपश्यत्।</u>
(ख)	तपतिस्म =	<u>अतपत्।</u>
(ग)	चिन्तयतिस्म =	<u>अचिन्तयत्।</u>
(घ)	वदतिस्म =	<u>अवदत्।</u>
(ङ)	गच्छतिस्म =	<u>अगच्छत्।</u>

यथा	अलिखत् =	लिखतिस्म।
(क)	<u>अकथयत् =</u>	कथयतिस्म।
(ख)	<u>अनयत् =</u>	नयतिस्म।
(ग)	<u>अपठत् =</u>	पठतिस्म।
(घ)	<u>अधावत् =</u>	धावतिस्म।
(ङ)	<u>अहसत् =</u>	हसतिस्म।

पु.ना.

अष्टमः पाठः - त्रिवर्णः ध्वजः

➤ कठिन शब्दार्थः

- त्रिवर्णः ध्वजः - तीन रंगो वाला झंडा
- उत्तोलनम - फहराना
- मोदकानि - लड्डू
- अराः - तीलियाँ
- प्रस्तोष्यन्ति - प्रस्तुत करेंगी

➤ शब्दार्थः

- जानासि - जानते हो
- कीदृश - कैसा
- श्वेतः - सफेद

त्रिवर्णः ध्वजः Summary

आज स्वतंत्रता दिवस है। विद्यालय के प्राचार्य ध्वजारोहण करेंगे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। विद्यार्थियों में मिठाई बाँटी जाएगी। . हमारे देश का झण्डा तिरंगा है। इसमें तीन रंग हैं। यथा-केसरिया, श्वेत तथा हरा। सबसे ऊपर केसरिया रंग है। यह शौर्य का सूचक है। बीच में सफेद रंग सत्य का तथा नीचे हरा रंग समृद्धि का सूचक है। इन रंगों का अन्य महत्व भी है। केसरिया रंग त्याग और उत्साह का सूचक है। श्वेत रंग सात्विकता और पवित्रता का सूचक है।

पु.ना.



हरा रंग पृथ्वी की शोभा और उर्वरता का सूचक है। . झण्डे के बीच में नीले रंग का पहिया है। इसे अशोक चक्र कहते हैं। यह न्याय और प्रगति का प्रवर्तक है। सारनाथ में अशोक स्तम्भ है। उससे ही इसका ग्रहण किया गया है।

इस पहिए में 24 अरे हैं। भारत की संविधान सभा में 22 जुलाई, 1947 को इस झण्डे को स्वीकार किया गया था। यह झण्डा राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। इसलिए स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया जाता है।

त्रिवर्णः ध्वजः Word Meanings Translation in Hindi

(क) (केचन बालकाः काश्चन बालिकाश्च स्वतन्त्रता-दिवसस्य ध्वजारोहणसमारोहे

सोत्साहं गच्छन्तः परस्परं संलपन्ति।)

देवेशः- अद्य स्वतन्त्रता-दिवसः। अस्माकं विद्यालयस्य

प्राचार्यः ध्वजारोहणं करिष्यति। छात्राश्च सांस्कृतिककार्यक्रमान् प्रस्तोष्यन्ति। अन्ते च मोदकानि मिलिष्यन्ति।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

त्रिवर्णः ध्वजः-तिरंगा (तीन रंगों वाला) झंडा (tricolour flag), ध्वजारोहणसमारोह-झण्डा फहराने के समारोह में (in flag-hoisting ceremony), गच्छन्तः-जाते हुए (while going), प्रस्तोष्यन्ति-प्रस्तुत करेंगे (will present), संलपन्ति-वार्तालाप करते हैं (are conversing), मोदकानि (ब०व०)-लड्डू (laddu/sweetmeats).

सरलार्थ :

(कुछ बालक और कुछ बालिकाएँ स्वतन्त्रता दिवस के ध्वजारोहण समारोह में उत्साहपूर्वक जाते हुए आपस में वार्तालाप कर रहे हैं।) देवेश-आज स्वतन्त्रता दिवस है। हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य ध्वजारोहण करेंगे (झंडा फहराएँगे) और विद्यार्थी सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत

(ख) डेविडः- शुचे! जानासि त्वम्? अस्माकं ध्वजः कीदृशः?

शुचिः- अस्माकं देशस्य ध्वजः त्रिवर्णः इति।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

जानासि-जानते हो (knows), कीदृशः-कैसा (How, like), त्रिवर्णः-तिरंगा (tricolour).

सरलार्थ :

डेविड-शुचि! क्या तुम जानती हो? हमारा झण्डा कैसा है? शुचि-हमारे देश का झंडा तिरंगा है।

(ग) सलीमः-रुचे! अयं त्रिवर्णः कथम्?

रुचिः- अस्मिन् ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति, अतः त्रिवर्णः। किं त्वम् एतेषां वर्णानां नामानि जानासि?

सलीमः- अरे! केशरवर्णः, श्वेतः, हरितः च एते त्रयः वर्णाः।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

वर्णाः (ब०व०)-रंग (colours), वर्णानां-रंगों का (of colours), केशरवर्णः-केसरी रंग (saffron colour), श्वेतः-सफेद (white), हरितः-हरा (green).

सरलार्थ :

सलीम - रुचि! यह तिरंगा क्यों है? रुचि- इस झंडे में तीन रंग हैं, इसलिए यह तिरंगा है।

क्या तुम इन रंगों के नाम जानते हो? सलीम - अरे ! केसरी रंग, सफेद और हरा ये तीन रंग हैं ?.

(घ) देवेश:- अस्माकं ध्वजे एते त्रयः वर्णाः किं सूचयन्ति?

सलीम:- शृणु, केशरवर्णः शौर्यस्य, श्वेतः सत्यस्य, हरितश्च समृद्धेः

सूचकाः सन्ति।

शुचि:- किम् एतेषां वर्णानाम् अन्यदपि महत्त्वम्?

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

शृणु-सुनो (listen), हरितश्च (हरितः + च)-और हरा (and green), समृद्धेः-समृद्धि का (of prosperity), अन्यदपि (अन्यत् + अपि)-और भी (any other).

सरलार्थः :

देवेश- हमारे ध्वज में ये तीन रंग क्या सूचित करते हैं?

सलीम- सुनो, केसरी रंग वीरता का, सफ़ेद सत्य का और हरा समृद्धि का सूचक है।

शुचि- क्या इन रंगों का कोई और भी महत्त्व है?

(ङ) डेविड:- आम्! कथं न? ध्वजस्य उपरि स्थितः केशरवर्णः त्यागस्य उत्साहस्य च

सूचकः। मध्ये स्थितः श्वेतवर्णः सात्त्विकतायाः शुचितायाः च द्योतकः।

अधः स्थितः हरितवर्णः वसुन्धरायाः सुषमायाः उर्वरतायाश्च द्योतकः।

तेजिन्दर:- शुचे! ध्वजस्य मध्ये एकं नीलवर्णं चक्रं वर्तते?

शुचिः - आम् आम्। इदम् अशोकचक्रं कथ्यते। एतत् प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्।

सारनाथे अशोकस्तम्भः अस्ति। तस्मात् एव एतत् गृहीतम्।

शब्दार्थाः (Word Meanings) : कथम् न-क्यों नहीं (why not), उपरि-ऊपर का (above), मध्ये-बीच में (in the middle), शुचितायाः-ईमानदारी से (of honesty), अधः-नीचे (below), वसुन्धरायाः-पृथ्वी का (of the earth), सुषमायाः-कान्ति/सौन्दर्य का (of beauty), उर्वरतायाः उपजाऊपन का (of fertility), नीलवर्णम्-नीले रंग का (of blue colour), वर्तते-है (is), कथ्यते-

कहा है (is said to be), प्रगतेः-प्रगति का (of progress), प्रवर्तकम्-सूचक – (indicator), गृहीतम्-लिया गया है (is taken)

सरलार्थ :

डेविड- हाँ, क्यों नहीं, ध्वज के ऊपर स्थित केसरी रंग त्याग व उत्साह का सूचक है। बीच में स्थित सफ़ेद रंग सात्विकता और ईमानदारी का द्योतक है। नीचे स्थित हरा रंग पृथ्वी की सुषमा व उर्वरता का द्योतक है।

तेजिन्दर- हे शुचि! ध्वज के मध्य में एक नीले रंग का चक्र है?

शुचि- हाँ हाँ! यह अशोक चक्र कहलाता है। यह प्रगति और न्याय का प्रवर्तक है। सारनाथ में अशोक स्तम्भ है। यह वहीं से लिया गया है।

(च) प्रणवः- अस्मिन् चक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

मेरी- भारतस्य संविधानसभायां 22 जुलाई 1947 तमे वर्षे समग्रतया अस्य ध्वजस्य स्वीकरणं जातम्।

तेजिन्दरः- अस्माकं त्रिवर्णः ध्वजः स्वाधीनतायाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः। अत एव

स्वतन्त्रतादिवसे गणतन्त्रदिवसे च अस्य ध्वजस्य उत्तोलनं समारोहपूर्वकं भवति।

जयतु त्रिवर्णः ध्वजः, जयतु भारतम्।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

अराः-तीलियाँ (spokes), संविधानसभायां-संविधान सभा में (in the Parliament Assembly), स्वीकरणम्-स्वीकरण/अपनाना (adopting/accepting), जातम् -हो गया (was done), उत्तोलनम् – फहराना (hoisting), समग्रतया-सर्वमत से (unanimously).

सरलार्थ :

प्रणवः- इस चक्र में 24 तीलियाँ हैं।

मेरी- भारत की संविधान सभा में 22 जुलाई 1947 के साल में (को) सर्वसंमति से इस ध्वज को अपनाया गया था। तेजिन्दर- हमारा तिरंगा झण्डा स्वाधीनता और राष्ट्रगौरव का प्रतीक/चिह्न है। इसलिए स्वतन्त्रता

दिवस और गणतन्त्र दिवस पर इस ध्वज को समारोहपूर्वक फहराया जाता है।

तिरंगा झण्डा विजयी हो अर्थात् तिरंगे झंडे की जय हो। भारत की जय हो।

अभ्यासः

➤ साहित्य

प्र-1 शुद्धकथनस्य समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनस्य समक्षं 'न' इति लिखत।

- (क) अस्माकं राष्ट्रस्य ध्वजेत्रयः वर्णाः सन्ति।
(ख) ध्वजे हरितवर्णः शान्तेः प्रतीकः अस्ति।
(ग) ध्वजेकेशर वर्णः शक्त्याः सूचकः अस्ति।
(घ) चक्रेत्रिंशत् अराः सन्ति
(ङ) चक्रं प्रगतेः द्योतकम्।

आम्
न
आम्
न
आम्

➤ व्याकरण

प्र-2 अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत।

	पदानि	विभक्तिः	वचनम्
यथा-	त्रयाणाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	समृद्धेः	षष्ठी	एकवचनम्
	वर्णानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	उत्साहस्य	षष्ठी	एकवचनम्
	नागरिकैः	तृतीया	बहुवचनम्
	सातित्वकतायाः	षष्ठी	एकवचनम्
	प्राणानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	सभायाम्	सप्तमी	एकवचनम्

➤ साहित्य

प्र-3 एकपदेन उत्तरत-

(क) अस्माकं ध्वजे कति वर्णाः सन्ति?

उत्तर-अस्माकं ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति।

(ख) त्रिवर्णध्वजे शक्त्याः सूचकः कः वर्णः?

उत्तर-त्रिवर्णध्वजे शक्त्याः सूचकः केशरवर्णः।

(ग) अशोकचक्रं कस्य द्योतकम् अस्ति?

उत्तर-अशोकचक्रं प्रगतेः न्यायस्य च द्योतकम् अस्ति।

(घ) त्रिवर्णध्वजः कस्य प्रतीकः?

उत्तर-त्रिवर्णध्वजः स्वाधीनतयाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः।

प्र-4 एकवाक्येन उत्तरत

(क) अस्माकं ध्वजस्य श्वेतवर्णः कस्यसूचकः अस्ति?

उत्तर-अस्माकं ध्वजस्य श्वेतवर्णः सात्विकतायाः शुचितायाः च सूचकः अस्ति।

(ख) अशोकस्तम्भः कुत्र अस्ति?

उत्तर-अशोकस्तम्भः सारनाथे अस्ति।

(ग) त्रिवर्णध्वजस्य उत्तालनं कदा भवति?

उत्तर-त्रिवर्णध्वजस्य उत्तालनं स्वतंत्रता दिवसे गणतंत्रता दिवसे च भवति।

(घ) अशोकचक्रे कति अराः सन्ति?

उत्तर-अशोकचक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

प्र-5 अधोलिखित वाक्येषु रेखाङ्कित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

(क) अस्माकं त्रिवर्णध्वजः विश्वविजयी भवेत्।

उत्तर-अस्माकं कःविश्व विजयी भवेत्?

(ख) स्वधर्मात् प्रमादं वयं च कुर्याम।

उत्तर-स्वधर्मात् किम्वयं न कुर्याम?

(ग) एत त्सर्वम् अस्माकं नेतृणां सद्बुद्धेः सत्फलम्।
उत्तर-एत त्सर्वम् अस्माकं नेतृणां कैः सत्फलम्?

(घ) शत्रूणां समक्षं विजयः सुनिश्चितः भवेत्।
उत्तर-कस्य समक्षं विजयः सुनिश्चितः भवेत्?

प्र-6 उदाहरणानुसारं समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत।

शब्दाः	विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा पट्टिका	षष्ठी	पट्टिकायाः	पट्टिकयोः	पट्टिकानाम्
अग्निशिखा	सप्तमी	अग्निशिखायाम्	अग्निशिखयोः	अग्निशिखासु
सभा	चतुर्थी	सभायै	सभाभ्याम्	सभाभ्यः
अहिंसा	द्वितीया	अहिंसाम्	अहिंसे	अहिंसाः
सफलता	पञ्चमी	सफलतयाः	सफलताभ्याम्	सफलताभ्यः
सूचिका	तृतीया	सूचिकया	सूचिकाभ्याम्	सूचिकाभिः

प्र-7 समुचित मेलनं कृत्वा लिखत।

- | क | ख |
|----------------------------|--|
| ● केशरवर्णः | शौर्यस्य त्यागस्य च सूचकः। |
| ● हरितवर्णः | सुषमायाः उर्वरतायाः च सूचकः। |
| ● अशोकचक्रम् | प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्। |
| ● त्रिवर्णध्वजः | स्वाधीनतायाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः। |
| ● त्रिवर्णध्वजस्य स्वीकरणं | 22 जुलाई 1947 तमे वर्षे जातम्। |